International Journal of Applied Research 2015; 1(2): 292-293

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(2): 292-293
www.allresearchjournal.com
Received: 02-12-2014
Accepted: 04-01-2015

डॉ. सुशील निम्बार्क
सह आचार्य चित्रकला, राज मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सुशील निम्बार्क
सह आचार्य चित्रकला, राज मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

आधुनिक भारतीय कला में मनजीत बाबा की कला व योगदान

डॉ. सुशील निम्बार्क

प्रस्तावना

आधुनिक भारतीय कला ने अभिनव प्रयोगों के द्वारा अपनी आत्मा को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस प्रस्तुति में तकनीक एवं माध्यम भले ही विदेशी हों लेकिन कला अभिव्यक्ति में भौगोलिक सीमाएं अर्थहीन होती है। अभिव्यक्ति और शैली, तकनीक आदि सभी तो उपादान होते है प्रस्तुति तो आधुनिक कला में अब नितान्त विषयगत होने लगी है और प्रत्येक कलाकार अपनी शैली की विशिष्टताओं से पहचाना जाता है। विशिष्टता, अर्थपूर्ण भी हो सकती है और अर्थहीन भी अथवा वस्तुनिरपेक्ष एवं वस्तुसापेक्ष भी हो सकती है। आधुनिक कला के इसी परिदृश्य में एक सशक्त नाम उभरता है मनजीत बाबा।

मनजीत बाबा की कला में सृजन की सरलता और अभिव्यक्ति की सहजता दूर से ही पहचानी जा सकती है। उनके चित्रों में रूमानियत है तो कहीं अतिशय कल्पना और उन्मुक्तता, लेकिन इन सब के साथ ही एक कोमल और तीव्र अभिव्यक्ति उनकी कला में दृष्टिगत होती है। उन्होंने अपने चित्रों पर कहीं भी सप्रयास भारतीयता को आरोपित नहीं किया है, बल्कि जो कुछ भी उनके चित्रों में है वह स्वयं आने सा प्रभाव छोड़ता है। वह मनजीत का अपना संस्कार है जो कभी प्रतीकों में कभी मिथकों में तो कभी कई रंगों के साथ उनके चित्रों में परिलक्षित होता है।

मनजीत बाबा का जन्म 1941 में पंजाब के धूरी नामक ग्राम में एक मध्यवर्गीय सिक्ख परिवार में हुआ था। मनजीत के बड़े भाई मनमोहन भी चित्रकारी का शौक रखते थे। उन्हीं के सहयोग और प्रेरणा से मनजीत ने रंग और ब्रश संभाला। चित्रकारी की धुन में मस्त मनजीत को बड़े भाई ने दिल्ली के पॉलीटेक्नीकल स्कूल ऑफ आर्ट में दाखिला दिलाया। यहां से उनकी कला शिक्षा शुरू हुई। मनजीत ने निरन्तर प्रगति की। भारतीय मिनएचर शैली का गहन अध्ययन किया, जिसका प्रभाव बाद में उनकी कलाकृतियों में परिलक्षित हुआ।

वह 1964 में उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड गये। वहां उन्होंने लन्दन स्कूल ऑफ प्रिंटिंग में सेरीग्राफी में दक्षता प्राप्त की। 1967 से 1971 तक वे लन्दन में ही प्रवास करते रहे और वहां चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाई, लेकिन अधिक समय तक विदेश में न रह सके और भारत लौट आए। यहां आकर मनजीत ने अनेक प्रदर्शनियां देश के मुख्य महानगरों में आयोजित की और धीरे–धीरे उनकी शैली भारतीयता और मौलिकता की पर्याय बन कर लोकप्रिय हो गई।

समकालीन भारतीय चित्रकारों में मनजीत अपनी शैली के कारण ही सबसे अलग पहचान बनाने में सक्षम रहे है। एक कारण यह भी है कि उनकी कला शैली किसी परम्परा का अनुकरण भी नहीं करती है। उनके चित्रों में भारतीय मिथकों का प्रयोग है। इस सन्दर्भ में वे कहते है कि जब एक आकृति के चार हाथ बनाता हूं तो मेरे लिए स्पेस का महत्व है। एक चाक्षुष आवश्यकता है। खाली जगह का प्रयोग है।

मनजीत मुगल, जैन, मानकोट एवं बसौली शैली से काफी प्रभावित है। उन्होंने पुराणों से लेकर घरेलू जीवन तक के अनेक चित्र निर्मित किए है। मनजीत के चित्रों में व्यक्त अनुभव, मुद्राएं, हमारी संवेदनाओं को सकिय करती है। स्केटिंग करती हुई लड़की हो या शेर या फिर नेवले के साथ स्त्री, सभी आकृतियों में गति एवं सहजता दिखाई पड़ती है। उनके चित्रों की एक प्रमुख विशेषता यह भी रहती है कि दो मानव आकृतियां अक्सर एक साथ नहीं होती। मानव आकृतियों के साथ–साथ पशु आकृतियों का चित्रण भी है। बकरी के साथ घास के स्थान पर वे कद्दू बनाते है। इस सन्दर्भ में वे कहते है क्या बकरी जिन्दगी भर घास ही खाती रहेगी जबकि आदमी तो बकरी को खा जाता है। यह बात मनजीत के उदात एवं संवेदनशील कलाकार होने की ओर संकेत है। बन्दर, बिल्ली या कोई अन्य पशु पक्षी से मनजीत मानवीय रिश्ता ढूंढ लेते है। इसी में उनकी कला का महत्व छिपा है।

उनके चित्रों में मानव मन को गुदगुदा देने वाली प्रकृति निहित है और साथ ही अद्भुत कल्पना शक्ति भी। वे स्वीकारते है कि फ्रांसीसी चित्रकार लीजे की कला से, उनकी कला प्रभावित है और यह प्रभाव विशेष रूप से आकृतियों की गोलाई में दृष्टिगत होता है। अग्निसेन, राजेश मेहरा, स्वामीनाथन के कार्यों का विशेष प्रभाव भी उनकी कला पर पड़ा।

विषय–वस्तु के रूप में उनके चित्रों में भारतीय कथाओं का अंकन अधिक है। विषय वस्तु में पुरातनता होने पर भी चित्र संयोजन में मौलिकता है तथा उनके तथ्य बहुत साफ होते हैं, जो कि शीर्षक रहित होते हुए भी आसानी से पहचाने जा सकते हैं। एक चित्र में उन्होंने महाभारत के भीम हाथी को उंगली पर उठाकर घुमाते हुए चित्रित किए है। जटायु शीर्षक चित्र में ऊपर जटायु आकमण की मुद्रा में है, नीचे रावण ढाल और तलवार से प्रहार करने की मुद्रा में है, लेकिन चित्र में तलवार को उल्टा पकड़ा बनाया गया है, जिससे समुचा चित्र नाटकीय लगता है और हिंसा पूर्ण विषय होने पर भी चित्र में हिंसा के भाव प्रकट नहीं होते।

मनजीत बाबा के चित्रों में रेखांकन के साथ–साथ उनका रंग विन्यास भी सुदृढ और गतिशील है तथा उनके चित्र सुन्दर रंग संयोजन से ही अच्छे लगते है। रंगों की गहरी एवं हल्की आभा से चित्र पृष्ठभूमि से बाहर निकलते हुए प्रतीत होते है। एक ही आकृति में उन्होने कई रंगों का प्रयोग दिखाया है। पृष्ठभूमि दूर से देखने पर सपाट प्रतीत होती है, लेकिन निकट से देखने पर उनमें ग्रेडेशन दृष्टिगोचर होता है। उनके अधिकतर चित्रों में प्राथमिक रंगों का प्रयोग है।

मनजीत बाबा के चित्रों को देखकर कहा जा सकता है कि वे यथार्थ को उसी रूप में चित्रित नहीं करते, जिसे आंखें देखती है, जो कुछ स्मृति में रहा होता है वे उसे देखते हुए कैनवास पर प्रस्तुत करते है। उनके चित्रों में, लघु–चित्रों के बहुत सारे रंगे तथा उनके रूपाकारों की सबसे बड़ी विशेषता उनका सरलीकरण ही नहीं बल्कि कपड़ों में रूई भर कर निर्मित किए गए बच्चों के खिलौनों जैसा दिखना है, जैसे उनमें हड्डियों है ही नहीं।

मनजीत बाबा ने भारतीय समकालीन कला को एक नई दिशा प्रदान की है। मनजीत बाबा की विषय वस्तु भारतीय पौराणिक कथाओं की याद दिलाती है। उनके चित्रों की आत्मा भारतीय है जो कि संसार के प्रत्येक कौने तक उनके चित्रों के माध्यम से सम्प्रेषित हो रही है।

संदर्भ

1. आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तंभ, प्रेमचन्द गोस्वामी, जयपुर 1995
2. कला तथा आधुनिक प्रवृतियाँ, लखनऊ, 1998
3. भारत की समकालीन कला (एक परिपेक्ष्य), प्राण नाथ मागो– नेशनल बुक ट्रस्ट दिल्ली
4. समकालीन कला, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली
5. आधुनिक चित्रकला का इतिहास, रवि साखलकर, रा.हि.ग्र.अ. जयपुर
6. मनजीत बाबा के चित्रों के फोटोग्राफ, द्वारा गुगल